Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

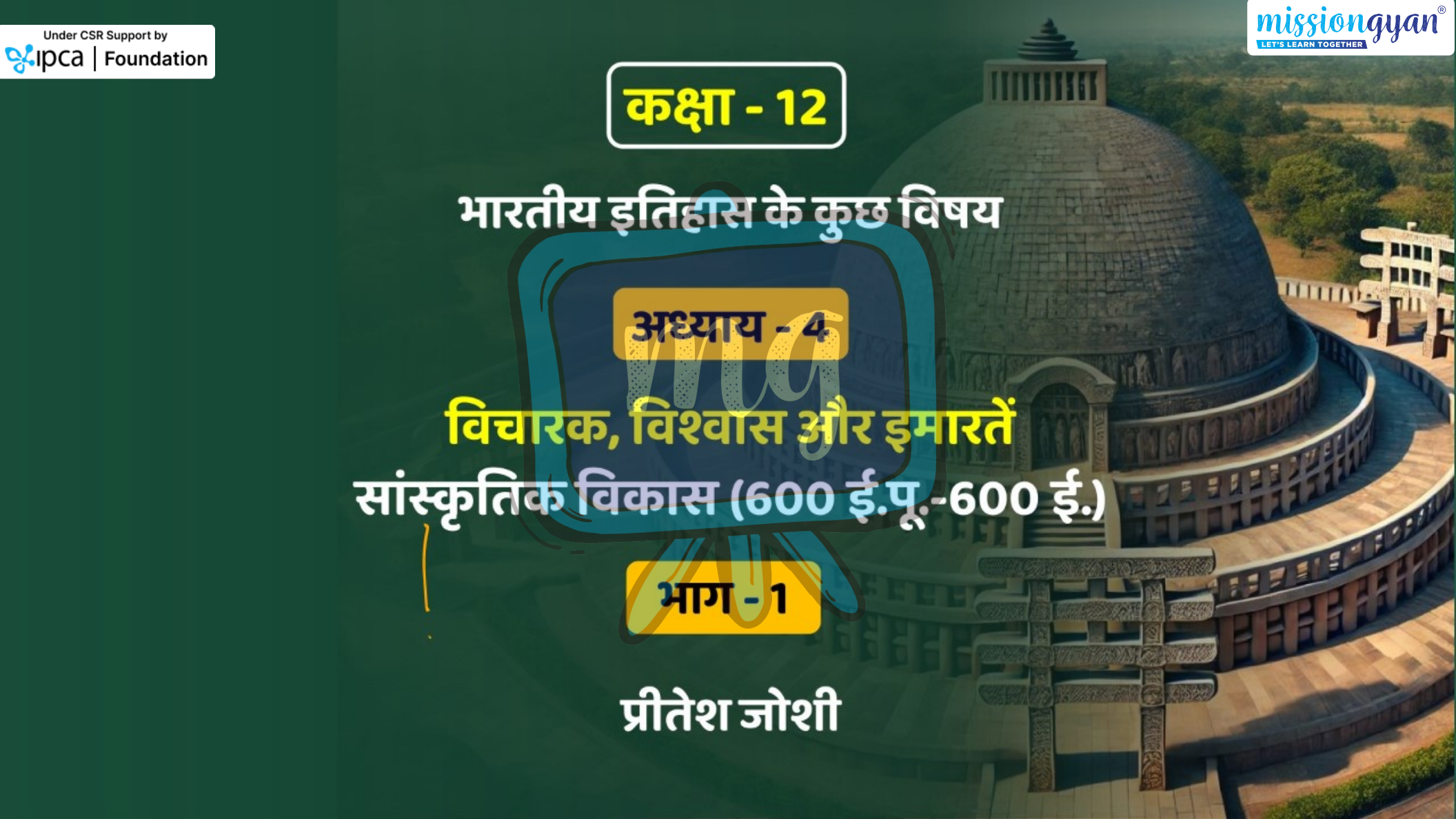

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 4

विचारक, विश्वास और इमारतें

सांस्कृतिक विकास (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 1

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

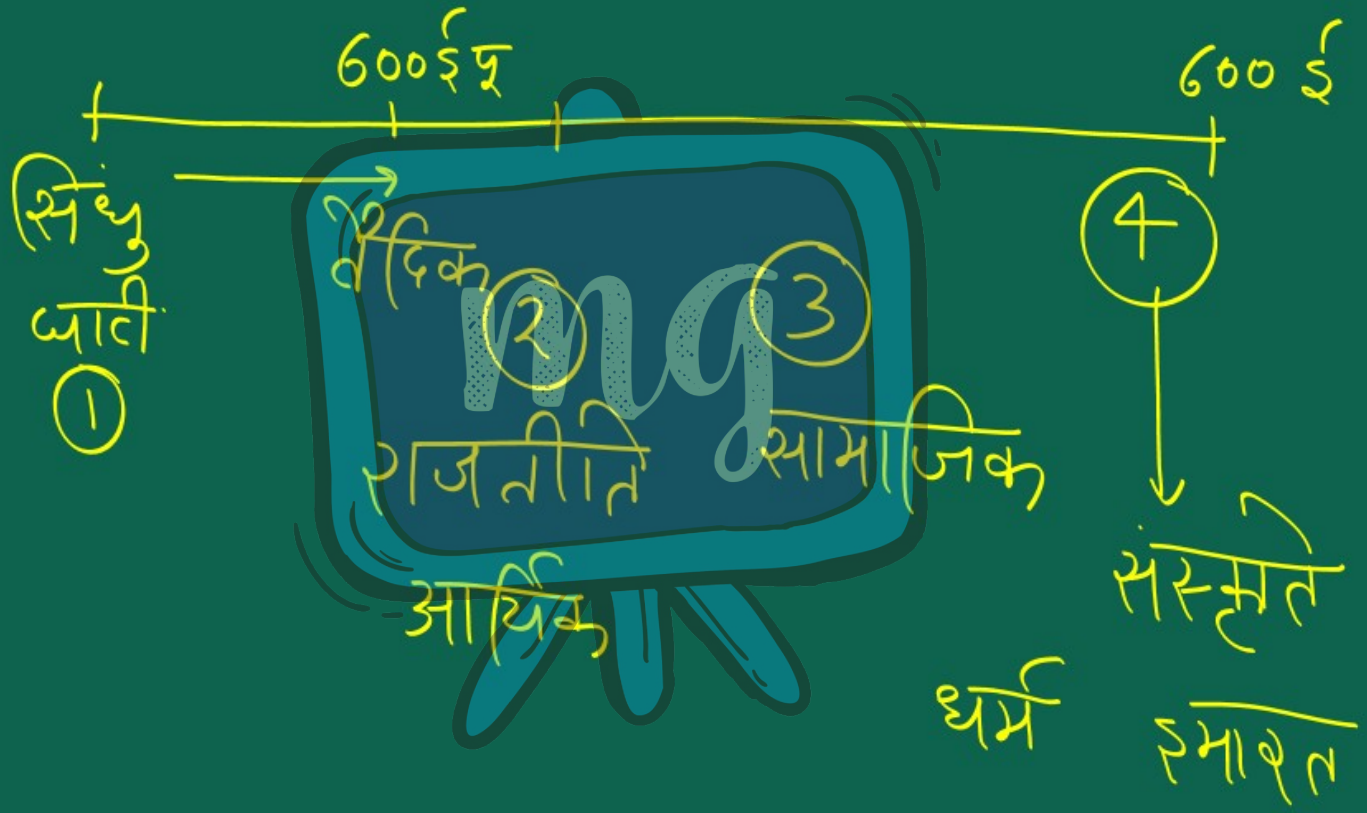

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

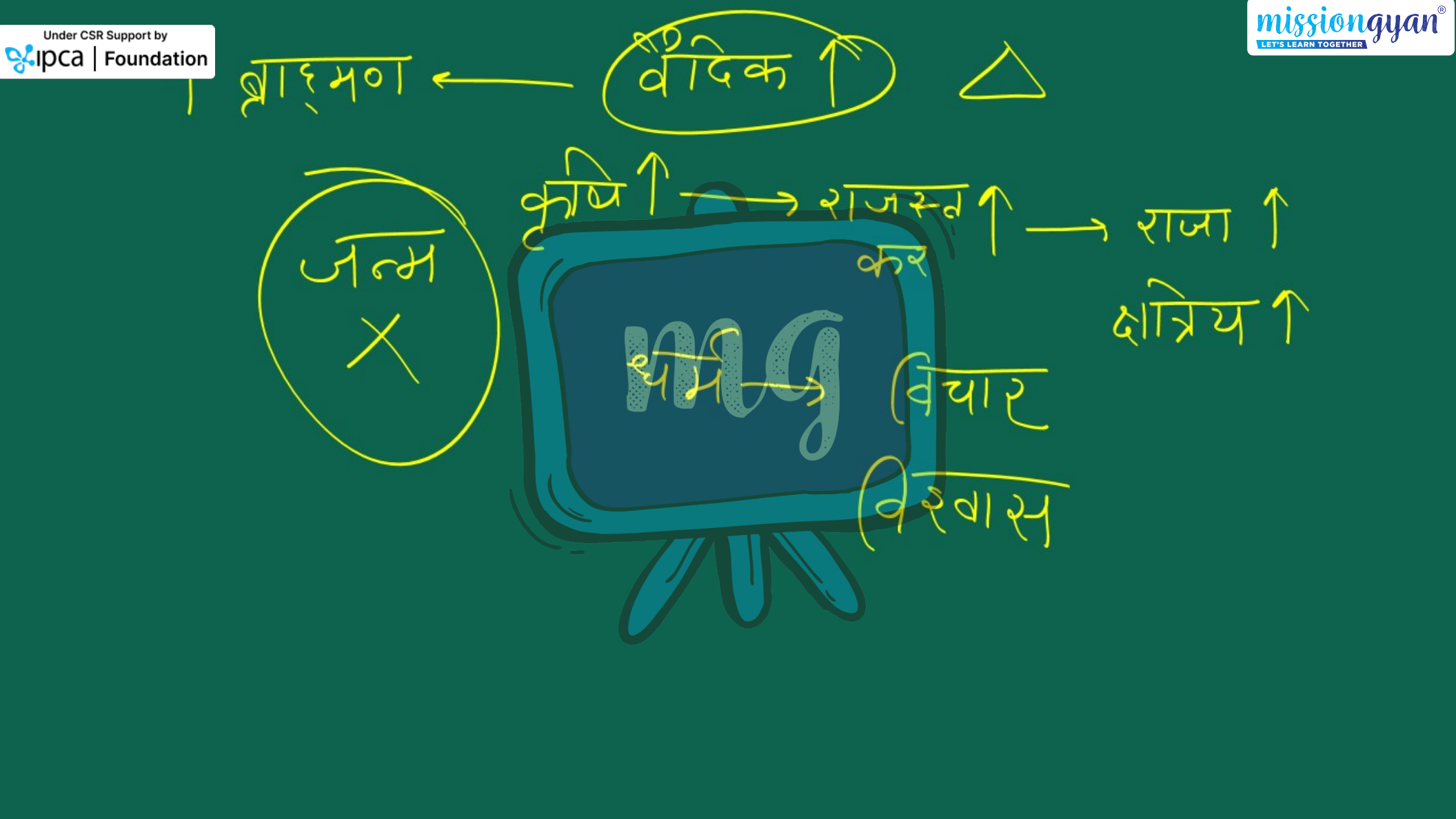

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



600 BC संस्कृति 600 AD

- इस अध्याय में हम 1000 साल लंबी यात्रा पर जाएँगे।
- इसमें हम दार्शनिकों के बारे में पढ़कर समाज को स्थित जानने का प्रयास करेंगे।
- हम यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि दार्शनिकों के विचार कैसे पहले मौखिक और फिर लिखित परंपराओं में संग्रहित हुए तथा उन्हें स्थापत्य और मूर्तिकला के माध्यम से कैसी अभिव्यक्ति मिली।
- ये सब चीजें जनता पर उनके स्थायी प्रभाव को दर्शाते हैं।
- हालाँकि हम बौद्ध धर्म का विशेष अध्ययन करेंगे।
- यद्यपि बौद्ध परंपरा अकेली विकसित नहीं हुई। दूसरी कई परंपराएँ थीं जो एक-दूसरे के साथ लगातार वाद-विवाद और संवाद चला रही थीं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

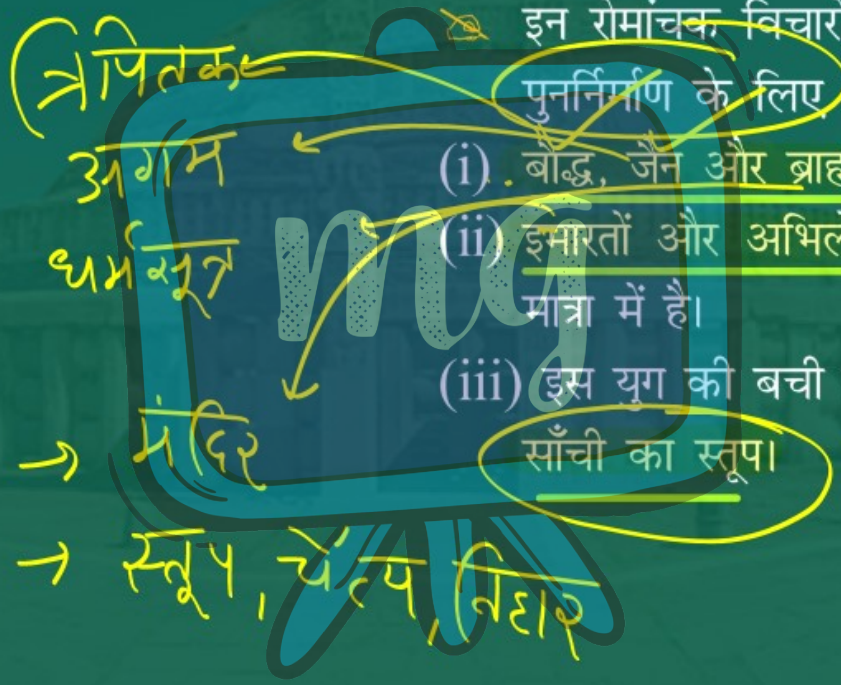

इन रोमांचक विचारों और विश्वासों की दुनिया के पुनर्निर्माण के लिए जो स्रोत हैं उनमें

(i) . बौद्ध, जैन और ब्राह्मण ग्रंथों के अलावा

(ii) इमारतों और अभिलेखों जैसे भौतिक साक्ष्य प्रभूत मात्रा में है।

(iii) इस युग की बची हुई इमारतों में सबसे सुरक्षित है साँची का स्तूप।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्तूप
टीले
अतरोष

MP

सांची का महा स्तूप

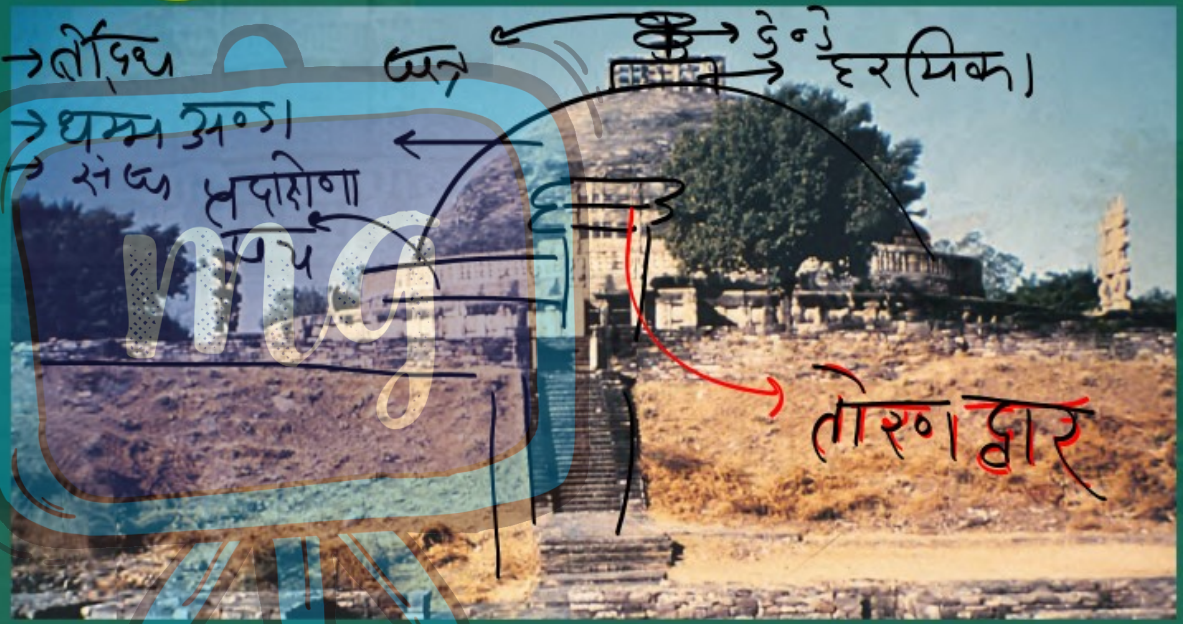

सांची का महान स्तूप

स्तूप - मिट्टी या पत्थर का ऊंचा ढेर। टीला (बौद्ध धर्म के लोगों का पूजनीय स्थल, अशोक ने बुद्ध के अवशेषों के हिस्से करके उन पर मुख्य शहरों के स्तूप बनवाये)।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

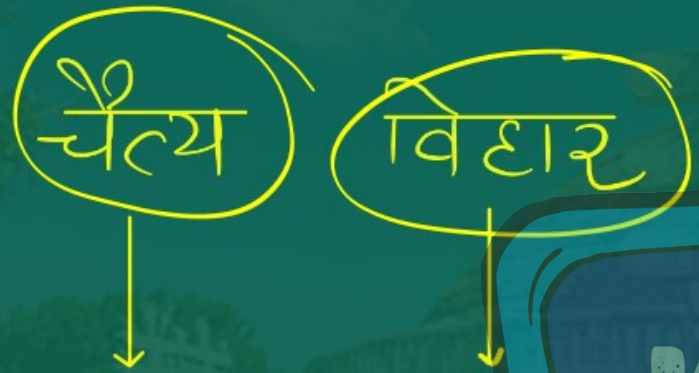

चैत्य – यह एक बौद्ध मंदिर होता है जहां प्रार्थना की जाती है। इनमें स्तूप समाहित होता है।

विहार – भिक्षुओं और भ्रमणों के रहने की व्यवस्था।

mg

Q. स्तूप
Q. चैत्य
Q. विहार

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





- 19वीं सदी के यूरोपियों में साँची के स्तूप को लेकर काफ़ी दिलचस्पी थी।
- फ्रांसीसियों ने सबसे अच्छी हालत में बचे साँची के पूर्वी तोरणद्वार को फ्रांस के संग्रहालय में प्रदर्शित करने के लिए शाहजहाँ बेगम से फ्रांस ले जाने की इजाज़त माँगी।
- कुछ समय के लिए अंग्रेज़ों ने भी ऐसी ही कोशिश की।
- सौभाग्यवश फ्रांसिसी और अंग्रेज़ दोनों ही बड़ी सावधानी से बनाई प्लास्टर प्रतिकृतियों से संतुष्ट हो गए।
- इस प्रकार मूल कृति भोपाल राज्य में अपनी जगह पर ही रही।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



भोपाल शासकों का योगदान –

- भोपाल के शासकों –
  (i) शाहजहाँ बेगम व उनकी उत्तराधिकारी
  (ii) सुल्तानजहाँ बेगम ने इस प्राचीन स्थल के रख-रखाव के लिए धन का अनुदान दिया।
- आश्चर्य नहीं कि जॉन मार्शल ने साँची पर लिखे अपने महत्वपूर्ण ग्रंथों को सुल्तानजहाँ को समर्पित किया।
- सुल्तानजहाँ बेगम ने वहाँ पर एक संग्रहालय और अतिथिशाला बनाने के लिए अनुदान दिया।
- वहाँ रहते हुए ही जॉन मार्शल ने उपर्युक्त पुस्तकें लिखीं। इस पुस्तक के विभिन्न खंडों के प्रकाशन में भी सुल्तानजहाँ बेगम ने अनुदान दिया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

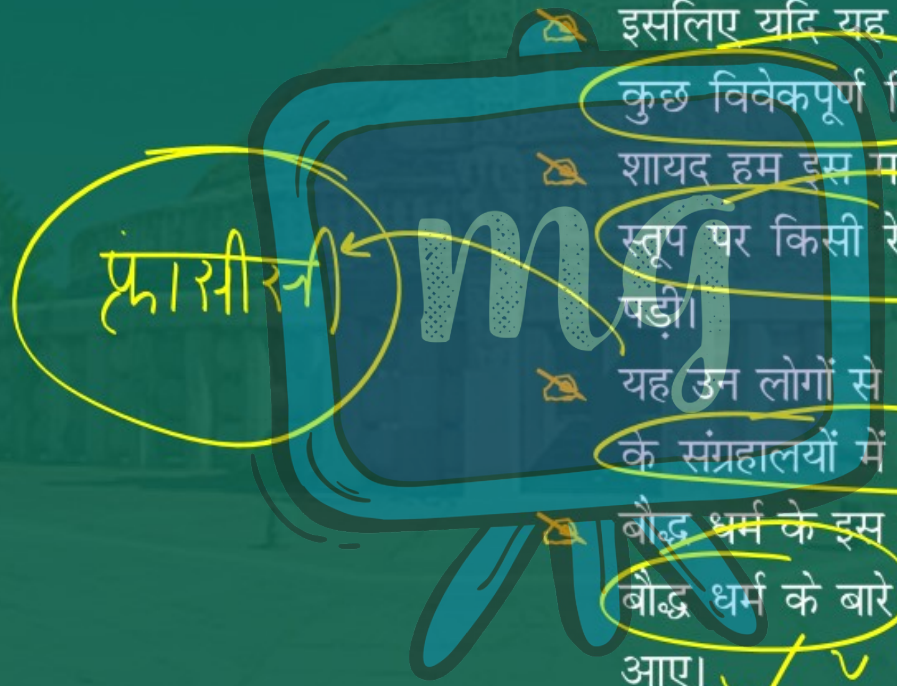

- इसलिए यदि यह स्तूप समूह बना रहा है तो इसके पीछे कुछ विवेकपूर्ण निर्णयों की बड़ी भूमिका रही है।
- शायद हम इस मामले में भी भाग्यशाली रहे हैं कि इस स्तूप पर किसी रेल ठेकेदार या निर्माता की नज़र नहीं पड़ी।
- यह उन लोगों से भी बचा रहा जो ऐसी चीज़ों को यूरोप के संग्रहालयों में ले जाना चाहते थे।
- बौद्ध धर्म के इस महत्वपूर्ण केंद्र की खोज से आरम्भिक बौद्ध धर्म के बारे में हमारी समझ में महत्वपूर्ण बदलाव आए।
- आज यह जगह भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के सफल मरम्मत और संरक्षण का जीता जागता उदाहरण है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

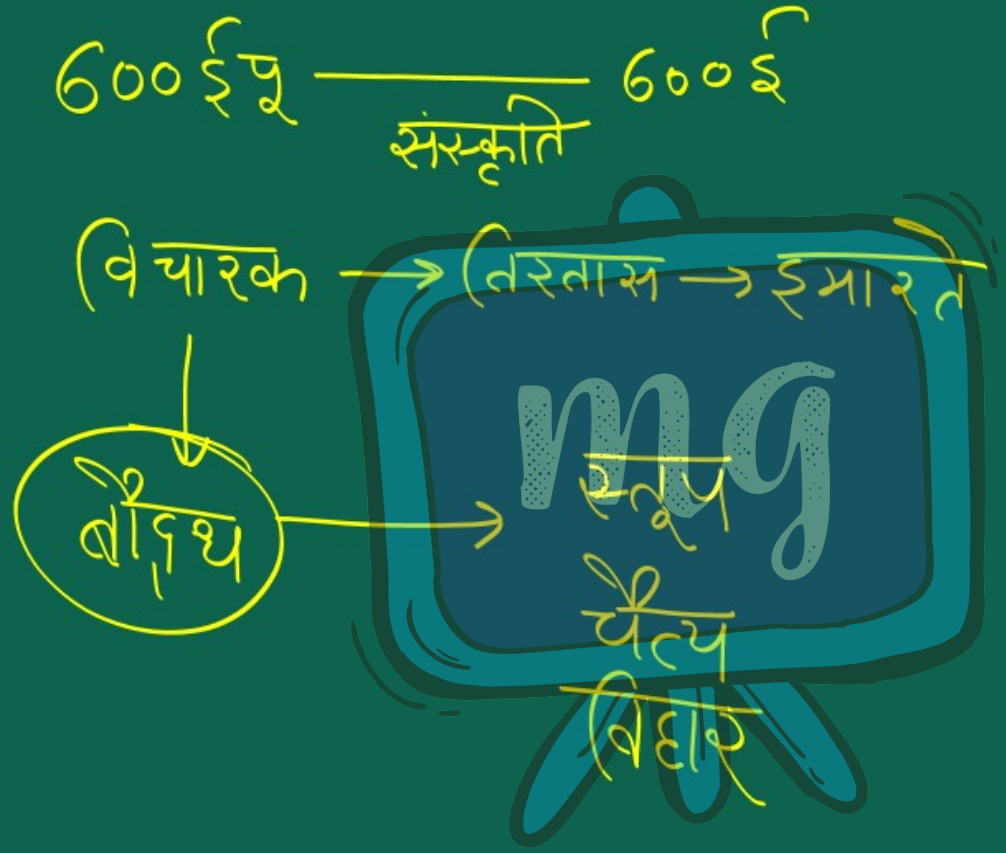

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

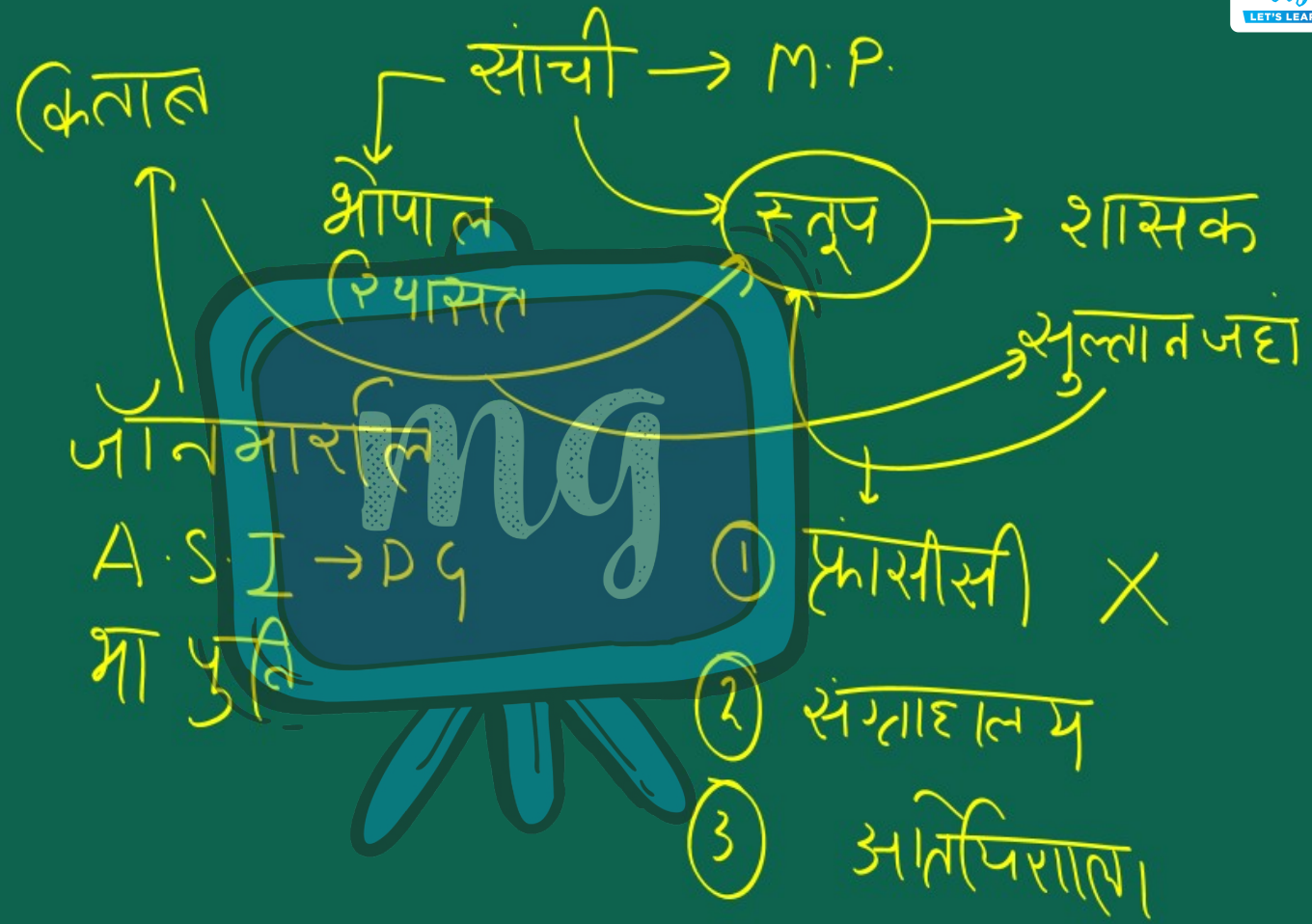

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

धार्मिक



बौद्ध-धर्म की पृष्ठभूमि

यज्ञ और विवाद

- ईसा पूर्व 1000 वर्ष का काल विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है।
- इस काल में ईरान में जरथुस्त्र (पारसी धर्म के संस्थापक)
- चीन में खुंगत्सी (कनफ्यूशियस)
- यूनान में सुकरात, प्लेटो, अरस्तु और
- भारत में महावीर स्वामी तथा महात्मा बुद्ध तथा कई अन्य चिंतकों का उद्भव हुआ।
- इन्होंने जीवन के रहस्यों को समझने का प्रयास किया।
- साथ ही वे इंसानों और विश्व व्यवस्था के बीच रिश्ते को समझने की कोशिश कर रहे थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

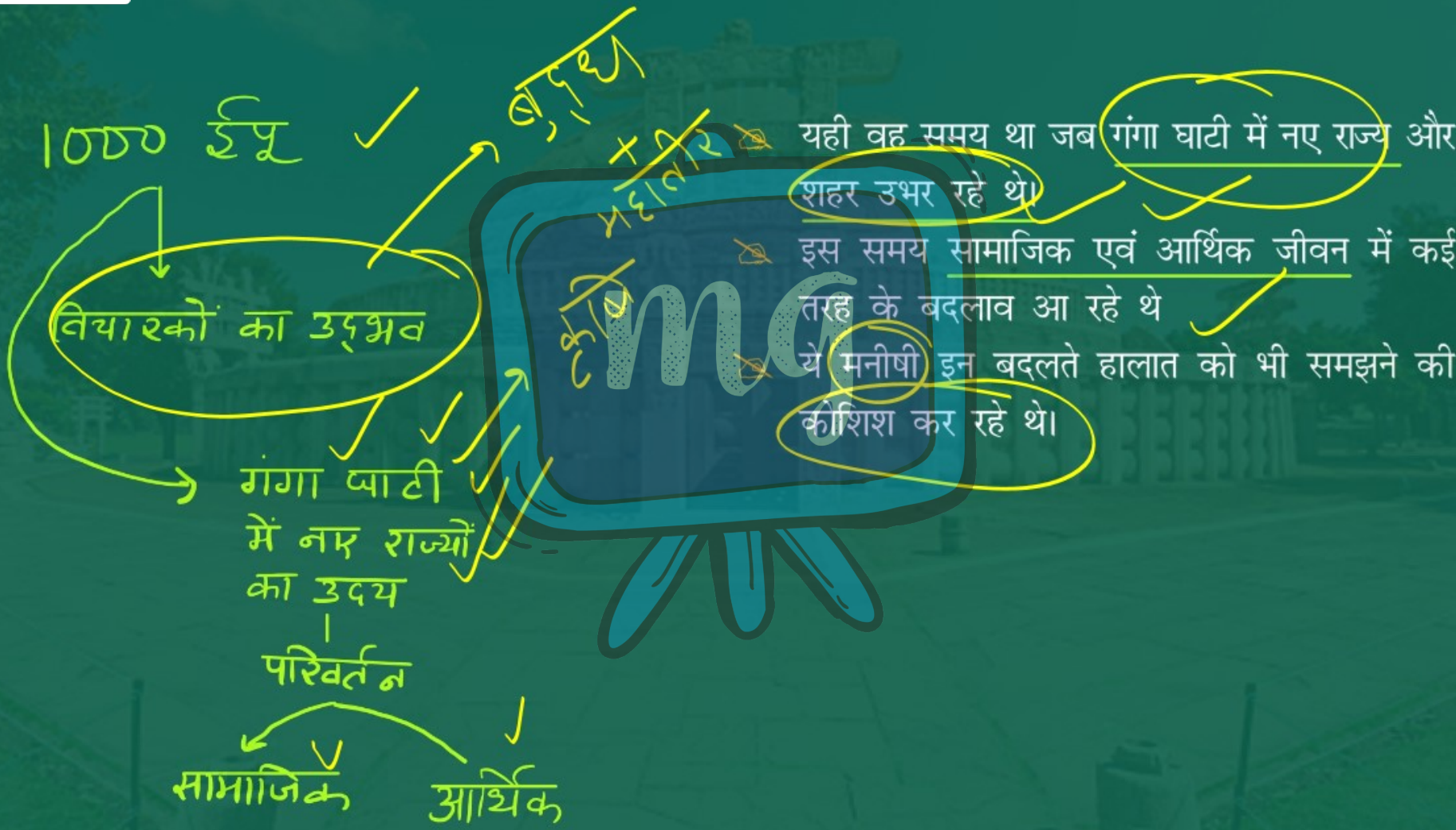

- यही वह समय था जब गंगा घाटी में नए राज्य और शहर उभर रहे थे।
- इस समय सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में कई तरह के बदलाव आ रहे थे
- ये मनीषी इन बदलते हालात को भी समझने की कोशिश कर रहे थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

यज्ञों की परंपरा



- चिंतन, धार्मिक विश्वास और व्यवहार की कई धाराएँ प्राचीन युग से ही चली आ रही थीं।
- पूर्व वैदिक परंपरा जो (1500 ई. पू.-1000 ई. पू.) में ऋग्वेद में संकलित है, भी वैसी ही एक परंपरा थी।
- ऋग्वेद अग्नि, इंद्र, सोम आदि कई देवताओं की स्तुति का संग्रह है।
- यज्ञों के समय इन स्तोतों का उच्चारण किया जाता था और लोग मवेशी, बेटे, स्वास्थ्य, लंबी आयु आदि के लिए प्रार्थना करते थे।
- शुरू-शुरू में यज्ञ सामूहिक रूप से किए जाते थे। (लगभग 1000 ई.पू. - 500 ई.पू.)
- कुछ यज्ञ घरों के मालिकों द्वारा किए जाते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- राजसूय और अश्वमेध जैसे जटिल यज्ञ सरदार और राजा किया करते थे।
- इनके अनुष्ठान के लिए उन्हें ब्राह्मण पुरोहितों पर निर्भर रहना पड़ता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

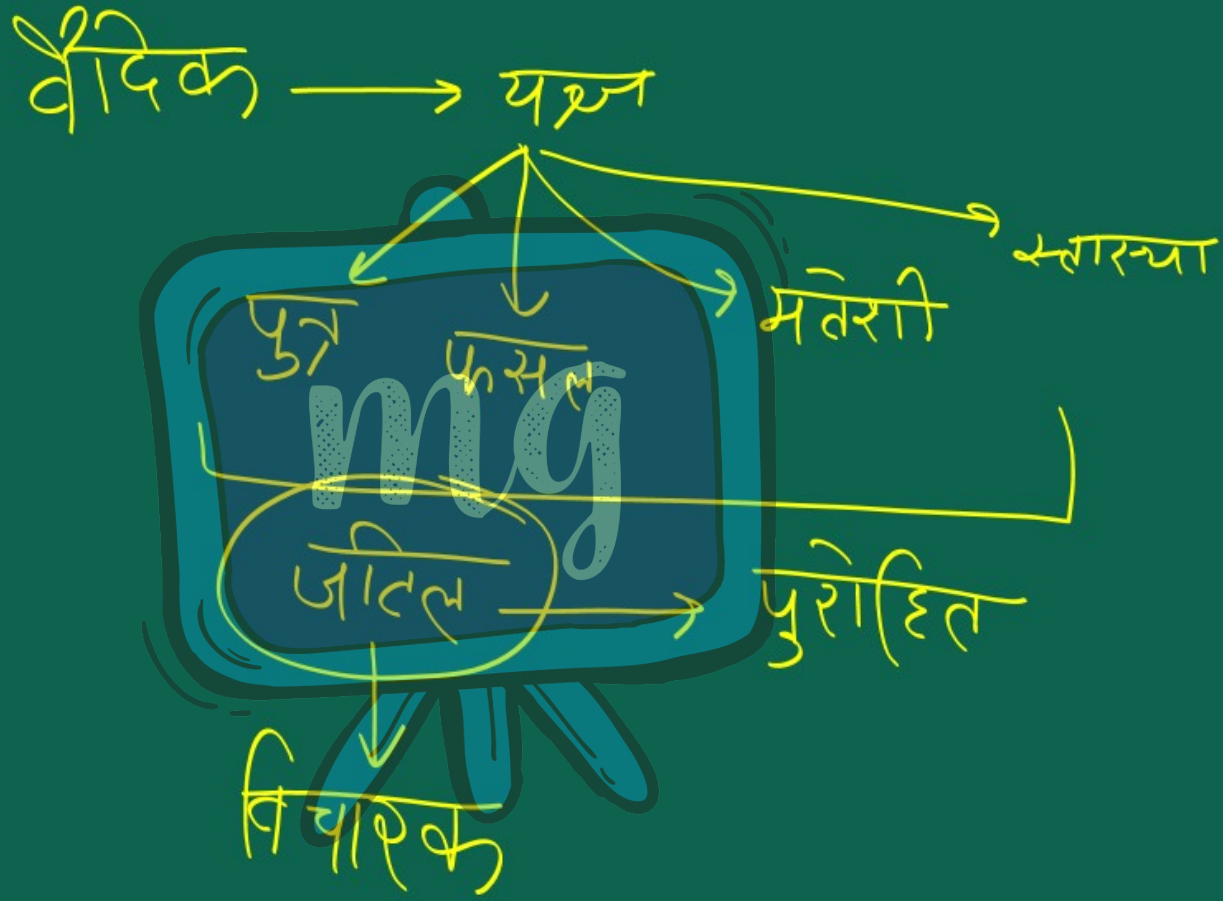

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

धर्म ← वेद → + || उपनिषद → गुरु

दर्शन शिल्प

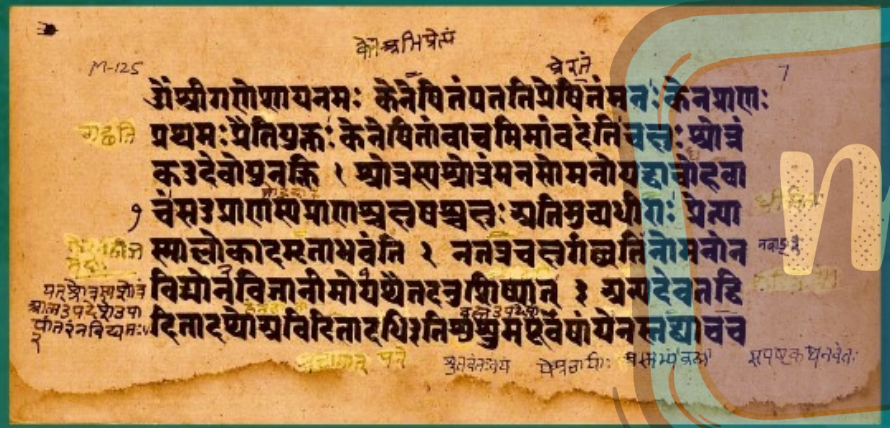

नये प्रश्न :-

- उपनिषदों (छठी शताब्दी ई.पू.) में पाई जाने वाली विचारधाराओं से यह पता चलता है कि लोग
  1. जीवन का अर्थ
  2. मृत्यु के बाद जीवन की संभावना
  3. पुनर्जन्म के बारे में जानने के उत्सुक थे।
- क्या पुनर्जन्म अतीत के कर्मों के कारण होता था?
- ऐसे मुद्दों पर जोरदार बहस होती थी।
- मनीषी यथार्थ की वास्तविकता को जानने तथा अभिव्यक्ति करने में लगे थे।
- वैदिक परंपरा से बाहर के कुछ दार्शनिक यह सवाल उठा रहे थे कि सत्य एक होता है या अनेक।
- लोग यज्ञों के महत्व के बारे में भी चिंतन करने लगे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

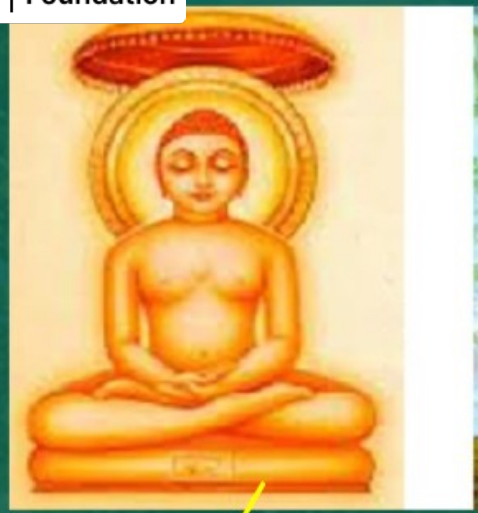



वाद-विवाद और चर्चाएं

- समकालीन बौद्ध ग्रंथों में 64 संप्रदायों या (चिंतन परंपराओं) का उल्लेख मिलता है।
- इसमें हमें जीवंत चर्चाओं ओर विवादों की एक झांकी मिलती है।
- शिक्षक एक जगह से दूसरी जगह घूम-घूम कर अपने दर्शन तथा विश्व के विषय में अपनी समझ को लेकर एक दूसरे से तथा सामान्य लोगों से तर्क-वितर्क करते थे।
- ये चर्चाएं कुटागारशालाओं (नुकीली छत वाली झोंपडी) या ऐसे उपवनों में होती थी जहां घुमक्कड़ मनीषी ठहरा करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

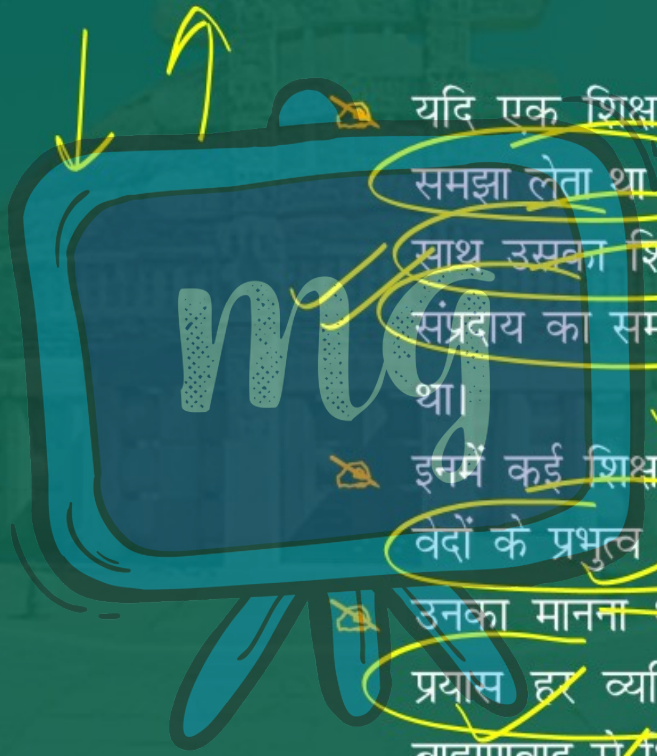

- यदि एक शिक्षक अपने प्रतिद्वन्दी को अपने तर्कों से समझा लेता था तो वह (प्रतिद्वंदी) अपने अनुयायियों के साथ उसका शिष्य बन जाता था। इसलिए किसी भी संप्रदाय का समर्थन समय के साथ घटता बढ़ता रहता था।
- इनमें कई शिक्षक महावीर स्वामी तथा महात्मा बुद्ध, वेदों के प्रभुत्व पर प्रश्न उठाते थे।
- उनका मानना था कि जीवन के दुखों से मुक्ति का प्रयास हर व्यक्ति स्वयं कर सकता था। यह बात ब्राह्मणवाद से भिन्न थी क्योंकि ब्राह्मणवाद के अनुसार किसी व्यक्ति का अस्तित्व उसकी जाति और लिंग से निर्धारित होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

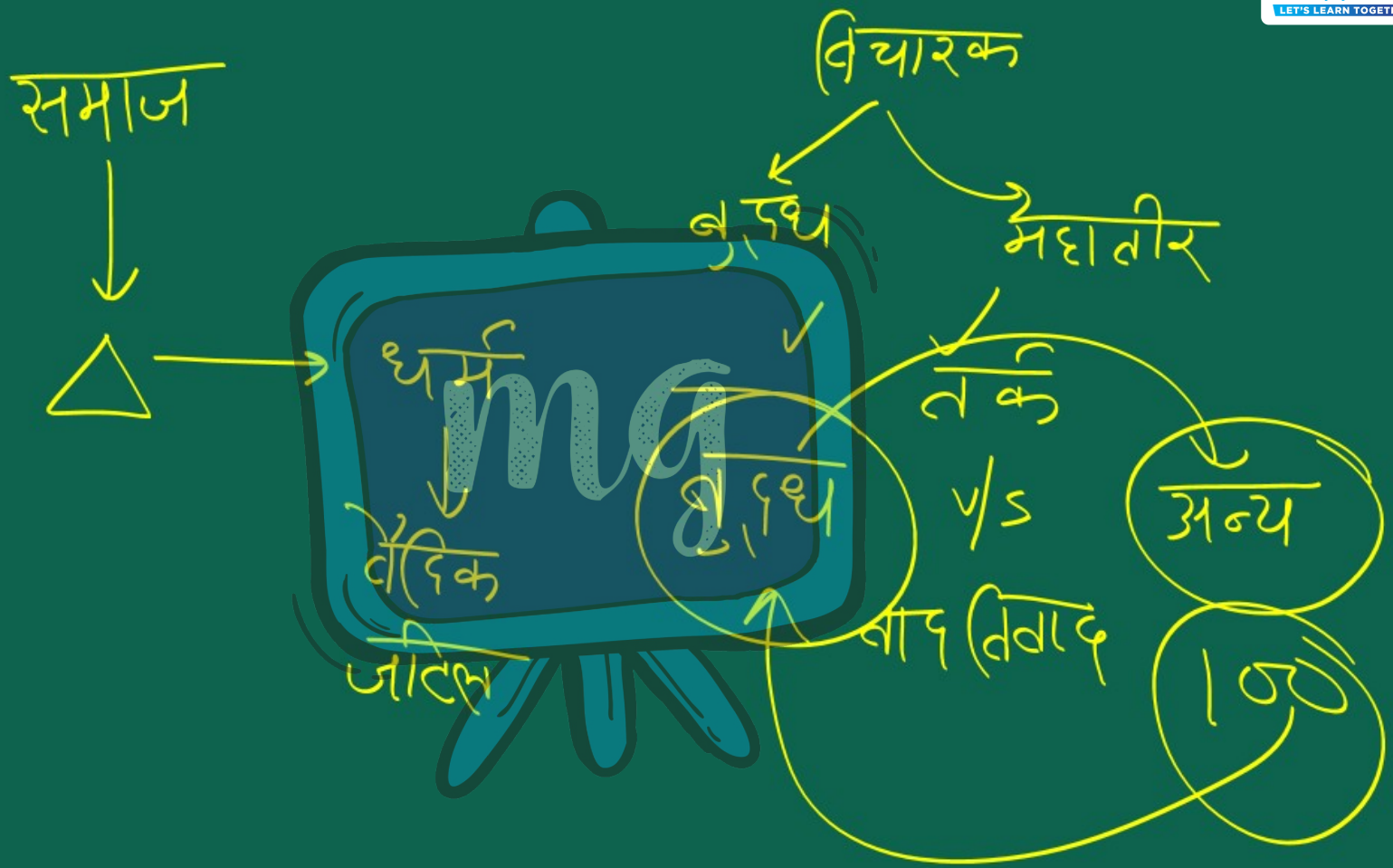

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. स्तूप, विहार, चैत्य ?

Q. साँची स्तूप के संरक्षण मे भोपाल को बेगमो का क्या योगदान रहा ?

